पशुपालक मित्र 1(3): 3-5; अक्टूबर, 2021
ISSN: 2583-0511 (Online)

शीत ऋतु में बछड़ों का प्रबंधन

डॉ. विपिन मौर्य

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

➢शीत ऋतु मे मौसम में होने वाले परिवर्तन से पशुओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है एवं पशुप्रबंधन ठीक न होने पर बछड़ो को खतरा पहुंच सकता है अतः नवजात एवं 6 माह तक के बछड़ों की देखभाल मनुष्यों के समान ही करनी चाहिए ।ऐसे समए मे निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है|

➢ठण्ड में पैदा होने वाले बछड़े-बछबड़ियों के शरीर को बोरी, पुआल आदि से रगड़ कर साफ करें, जिससे उनके शरीर को गर्मी मिलती रहें और रक्तसंचार भी बढ़े । ठण्ड में बछड़े-बछड़ियों का विशेष ध्यान रखे, जिससे कि उन्हे सफेद दस्त, निमोनिया एवं अन्य रोगों से बचाया जा सके।

➢नवजात बछड़ों को खीस हल्का गरम करके जरूर पिलाएं, इससे बीमारी से लडने की क्षमता में वृद्धि होती है और नवजात पशुओं की बढ़ोतरी भी तेजी से होता है। खीस पिलाने (3-5 दिन) के बाद बछड़ों को दूध भी गुनगुना करके पिलाए |

➢बड़े बछड़ों को कभी भी ठंडा चारा व दाना नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे पशुओं को ठंड लग जाती है।

➢सर्दियों में शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए पशुओं में ऊर्जा, प्रोटीन व अन्य पोषक तत्वों की जरूरत बढ़ जाती है अतः बछड़ों को संतुलित आहार प्रदान करे । बर्फबारी, शीतलहर आदि में तो पशुओं की ऊर्जा की जरूरत 100 फीसदी तक बढ़ जाती है |

➢सर्दियों में उच्च केलोरिक आहार में विटामिन व खनिजलवण मिलाना चाहिए। सांद्र राशन में 2 फीसदी खनिजतत्व और 1 प्रतिशत नमक मिलाना चाहिए। पशुआहार की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए वरना पशु का पाचन बिगड़ सकताहै ।

➢सर्दियों मे बछड़े व बछड़ियों को 30 से 60 ग्राम गुड़ अवश्य खाने को देना चाहिए |

➢बछड़ों को पीने के लिए ठंडा पानी नहीं देना चाहिए चूकि ठंडा पानी शरीर के तापमान को और गिरा देता है अतः हल्के गुनगुने पानी का प्रयोग करना चाहिए |

➢सर्दी मे बछड़ों को सुबह 9 बजे के पहले और शाम 5 बजे के बाद पशुशाला से बाहर न निकाले एवं दोपहर मे बाड़े मे खुला छोड़ देना चाहिए जिससे वे पर्याप्त मात्र मे धूप ले सके एवं खेल कूद कर स्फुरतिवान बने |

➢ठंड के मौसम मे बछड़ों के आवास प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए | गौशाला के दरवाजे एवं खिड़कियों पर बोरे या त्रिपाल लगा दे जिससे शीतलहर अंदर न प्रवेश करे |ध्यान रहे पशुशाला को पूरी तरह से बंद न करे इससे दूषित एवं हानिकारक गैस जमा हो जाती और बछड़ों को नुकसान पहुचती है |

➢बछड़ों के विश्राम स्थल पर पुआल ,भूसा अथवा पेड़ों की सूखी पत्तिया बिछा दे और समय पर उसे बदलते रहे अन्यथा यह बिछावन गोबर ,मूत्र एवं नमी के कारण कई बीमारियों को आमंत्रित कर सकता है | पशुशाला मे व्यवस्था इस प्रकार हो की सूर्य की रोशनी देर तक रहे |

➢बाड़ों का तापमान 7-8 डिग्री से कम नहीं होना चाहिए यदि ऐसा हो तो रात मे हीटर का प्रयोग करना चाहिए

➢अत्याधिक ठंड होने पर बछड़ों को जूट के बोरे पहनाए एवं अलाव जलाए | बछड़ों के गले मे रस्सी छोटी रखे ताकि वे अलाव तक न पहुचे|

➢ठंड ज्यादा होने पर बछड़ों को नहलाए नहीं अपितु ब्रश से उनकी सफाई करे जिससे गोबर ,धूल एवं गंदगी उनके शरीर से साफ हो जाए| यदि नहलाना आवश्यक हो तो बछड़ों को धूप मे गुनगुने पानी से नहलाए |

➢सर्दी के मौसम मे नमी होने के कारण पशुओ मे खुरपका ,मुहपका एवं गलघोंटू जैसी बीमारियों से बचाव के लिए समय पर टीका लगवाए |

➢दूषित वातावरण एवं बंद कमरे मे पशुओ को रखने तथा संक्रमण से निमोनिया रोग बछड़ों मे होता है | रोग ग्रसित पशुओ की आँख व नाक से पानी गिरने लगता है|

अधिक ठण्ड पड़ने पर जूट की बोरी या पुराने गरम वस्त्र से पशुओं को ढका जा सकता है

बछड़ों के विश्राम स्थल पर बिछावन

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢ठंड से प्रभावित बछड़ों के आँख व नाक से पानी आने लगता है | भूख कम लगती है और शरीर के रोए खड़े हो जाते है | उपचार के लिए एक बाल्टी खौलते पानी के ऊपर सूखी घास रख दें | रोगी बछड़े के चेहरे को बोरे या मोटे चादर से ऐसे ढ़के की नाक व मुह खुला रहे | फिर खौलते पानी भरे बाल्टी पर रखी घास पर तारपीन का तेल बूंद –बूंद कर गिराए | भाप लेने से पशु को आराम मिलेगा |

➢ठंड से प्रभावित पशु के शरीर में कपकपी बुखार के लक्षण होते हैं तो तत्काल निकटवर्ती पशुचिकित्सक को दिखाएं ।

➢ठंड के मौसम मे ज्यादा दलहनी हरा चारा जैसे बरसीम व अधिक मात्रा मे अन्न व आटा , बच हुआ बासी भोजन खिलाने से अफरा रोग हो जाता है | इसमे बछड़े के पेट मे गैस बन जाती है |

➢सर्दियों मे अक्सर बछड़ों मे दस्त की शिकायत होती है ,इसके बचाव के लिए पशुशाला को साफ सुथरा रखे और समय समय पर चूना एवं फ़िनाइल आदि का छिड़काव करे |

➢ अन्तः परजीवियों से बचाओ के लिए बछड़ों को भार के अनुसार कृमिनाशक दवाए जैसे की Albendazole (अलबॉमर,निलवर्म ,जानिल आदि) देते रहना चाहिए |

➢बाह्य परजीवियों से बचाव के लिए (बूटऑक्स और क्लीनर की 2 मिली. मात्रा 1 लीटर पानी मे मिला कर) ग्रसित बछड़ों के शरीर पर लगा देना चाहिए और 2 घंटे बाद बछड़े को नहलाना चाहिए |